

पोलीहाउस में जरबेरा की खेती

प्रियंका कुमारी जाट¹ और मुरारी लाल चोपड़ा²

¹(उधान विभाग) राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान दुर्गापुरा, जयपुर

²(उधान विभाग) श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि महाविद्यालय, जोबनेर, जयपुर

जरबेरा को “अफ्रीकन डेंजी” के नाम से भी जाना जाता है। यह बहुवर्षीय कर्तित पुष्प वाला पोधा है। एवम कर्तित पुष्पों में इसका महत्वपूर्ण स्थान है। जरबेरा की खेती बिना पोलीहाउस के भी की जा सकती है। परन्तु खुले स्थान पर जरबेरा लगाने पर पोधों की अच्छी वृद्धि नहीं हो पाती जिसके परिणामस्वरूप फूलों की गुणवत्ता पर असर पड़ता है, और बाजार में अच्छा मूल्य नहीं मिल पाता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के फूल लेने के लिए जरबेरा को पोलीहाउस/ग्रीनहाउस में ही उगाना चाहिए। पोलीहाउस एक विशिष्ट आकार की संरचना होती है, जिसको 200 से 400 माइक्रोन मोटाई वाली पराबैंगनी विकिरणों से अवरोधी, सफेद रंग की पारदर्शी प्लास्टिक चादर से ढका जाता है। कम क्षेत्रफल में अधिकतम लाभ कमाने के लिए यह एक उत्तम तकनीक है। हालांकि इसमें प्रारम्भिक खर्च अधिक लगता है। परन्तु भारत सरकार तथा राज्य सरकारों द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ भी इसमें मिलता है। ग्रीनहाउस में फूलों के उत्पादन की तकनीक भारत के लिए नई है। इसी कारण सभी इकाईयों को होलैंड,

इजराइल तथा अन्य देशों के सहयोग से चलाया गया है।

पोलीहाउस के फायदे:

- पोलीहाउस में इच्छित वातावरण बनाकर सभी तरह के फूल पुरे वर्षभर पैदा किये जा सकते हैं।
- किसी भी फूल वाली फसल को किसी भी स्थान पर, किसी भी मौसम में पैदा किया जा सकता है।
- पोलीहाउस में अच्छे गुणवत्ता युक्त फूल पैदा किये जा सकते हैं। इसलिए पोलीहाउस में पैदा किये गए फूल निर्यात के लिए ज्यादा उपयुक्त होते हैं।
- जिन क्षेत्रों में परंपरागत खेती नहीं की जा सकती, उनमें पोलीहाउस की मदद से फूल पैदा करने की संभावनाएं बढ़ जाती हैं।
- शहरी एवम् सीमांत किसानों के लिए लाभकारी है।
- फसलों में लगने वाले कीट व बीमारियों की आसानी से सुरक्षा होती है।
- प्रति इकाई क्षेत्र में अधिक उत्पादन होता है।

पोलीहाउस की कुछ सीमाएँ:

- पोलीहाउस बनवाने में किसानों को प्रारम्भ में ज्यादा पूंजी लगानी पड़ती है।



➤ यह केवल व्यासायिक एवम् बागवानी फसलों के लिए ज्यादा उपयोगी हैं ! दूसरी फसलों के लिए नहीं।

जलवायु: जरबेरा को दिन में मध्य में सूर्य के अधिक प्रकाश एवम् तापमान से फसल को बचाने के लिए 60 प्रतिशत छायादार नेट अथवा जाली का प्रयोग करे। जरबेरा के फूलों के अधिक उत्पादन हेतु दिन का तापमान 18 से 24 डिग्री सेल्सियस तथा रात का तापमान 12 से 14 डिग्री सेल्सियस रहना चाहिये। पोलीहाउस में 60-70 प्रतिशत की आपेक्षिक आद्रता अच्छे पुष्प उत्पादन के लिए जरूरी हैं। तथा कार्बन डाईआक्साइड का स्तर 1000 से 1500 पी. पी. एम बना रहना चाहिये।

पोलीहाउस के लिए युक्त किस्म: व्यवसायिक पुष्प उत्पादन के लिए सही किस्मों का चुनाव बहुत जरूरी हैं। इसलिए एसी किस्मों का चुनाव करना चाहिए जिनका तना लम्बा, फूल का प्रकार डबल व अधिक पखुडियाँ हो! सांगरिया, सनसेट, तारा, जपाका, चोनी, रोजेरियन, रोजुला, सलीना, टिकोरा एवम स्टार लाइट आदि जरबेरा की उन्नत किस्मों हैं ! तलिकानुसार हैं।

पुष्प के रंग के आधार पर	किस्मों का नाम
लाल	ब्यूटी, सनी बॉय, सांगरिया
संतरी	ओरनेला, आप्टीमा, सनसेट तारा
सफेद	व्हाइट सन , ओलीबिया
पीला	अरुबा , गोल्डन फीवर,

गोल्डन गेट , गोल्ड सपोट
गुलाबी डाराबेल , पिफयोया,
रोजबोला

प्रवर्धन: जरबेरा का प्रवर्धन मुख्य रूप से सकर्स के द्वारा किया जाता हैं। जून के महीने में पुरे पोधे को उखाड़ कर उसके सभी सकर्स को अलग कर लिया जाता हैं। ओसतन एक पोधे से एक वर्ष में 5 से 7 सकर्स प्राप्त किये जा सकते हैं। तथा माइक्रोसंवर्धन द्वारा कम समय में एक ही पोधे से अधिक संख्या में सवस्थ पोधे तैयार किये जा सकते हैं।

पोधो की रोपाई: जरबेरा के पोधो के रोपाई बसंत ऋतुमें (जनवरी से मार्च) तथा गर्मी में (जून से अगस्त) कर सकते हैं। पोधो की रोपाई पंक्ति से पंक्ति 30 - 40 सेंटीमीटर एवम पोधे से पोधे की दूरी 20 से 30 सेंटीमीटर पर करना उचित रहता हैं। पोधो को रोपते समय ध्यान रखे की पोधो का क्राउन 1 से 2 सेंटीमीटर जमीन से ऊपर होना चाहिये एवम जड़ तंत्र का नहीं छोड़ना चाहिये।

सिंचाई: ड्रिप (टपका) सिंचाई प्रणाली एक नवीन पद्धति हैं, टपका विधि द्वारा पोधो को बूंद - बूंद के रूप में पोधे की जड़ क्षेत्र में उपलब्ध कराया जा सकता हैं। ड्रिप विधि से जल के साथ - साथ उर्वरक, कीटनाशक व अन्य घुलनशिल रसायनिक तत्वों को भी सीधे पोधो तक पहुँचाया जा सकता हैं।



फर्टिगेशन: सिंचाई जल के साथ पोषक तत्व देने की विधि को फर्टिगेशन कहते हैं। समय - समय पर इसमें बूंद- बूंद सिंचाई पद्धति द्वारा पोषक तत्वों को देते हैं। नत्रजन, फास्फोरस एवम पोटाश 12:8:25 ग्राम प्रति वर्ग मीटर की दार से डालना चाहिये। सूक्ष्म तत्वों जैसे आयरन, जिंक, बोरान, कॉपर और मैग्नीशियम आदि की उचित मात्रा को 0.2 प्रतिशत घोल के रूप में अथवा फलावर बूस्टर द्वारा एक महीने के अन्तराल पर देते रहना चाहिये।

फूलों की कटाई: कटाई की उपयुक्त अवस्था का ज्ञान होना बहुत ही आवश्यक है। फूल अतिशिघ्र नाशवान प्रकृति के होते हैं अतः इनकी कटाई या तो जल्दी सुबह या फिर देर शाम के समय, जब तापमान कम हो, करनी चाहिये। फूलों को मुख्यतः उस समय तोड़ना चाहिये, जब फूल के एक दो रे-फ्लोरेट्स पूरी तरह से खुल जाए। सामान्यतया कटाई का सही समय पोथो की प्रजाति, किस्म, मौसम, मंडी की दूरी तथा उपभोक्ताओं की पसंद पर निर्भर करनी है।

उपज:

जरबेरा के कतिर्त पुष्पों की पैदावार कई कारकों जैसे: पोलीहाउस का वातावरण, उगाई जाने वाली किस्म, पोथे की आयु, रख-रखाव तथा प्रति वर्ग मीटर रोपित पोथे की संख्या पर निर्भर करती है। जरबेरा की सामान्यतः 24-30 महीने की फसल होती है। पोथे को

लगाने के बाद 3-4 महीने में फूल आने शुरू हो जाते हैं ! पोलीहाउस में ओसतन 250-300 फूल प्रति वर्ग मीटर प्रति वर्ष प्राप्त होते हैं। जिनमें 75 - 80 प्रतिशत तक प्रथम श्रेणीके पुष्प होते हैं। फूल तोड़ते के बाद उनको पानी में 3 - 4 घंटे के लिए रखना चाहिये।

कीट एवम रोग नियंत्रण:

पोलीहाउसमें उचित प्रबंधन एवम रख-रखाव होने पर फसलों में कीट एवम रोगों का प्रकोप नहीं होता। लेकिन कुछ जैसे : सफेद मक्खी, पत्ती-छेदक, चेंपा तथा स्पोडोप्टेरा सुंडी का प्रकोप आम बात है। इनकी रोगथाम के लिए येलो कार्ड (सफेद मक्खी, चेंपा के लिए) तथा फेरोमेन ट्रेप और लाईट ट्रेप (स्पोडोप्टेरा सुंडी के लिए) लगाने चाहिये। अधिक आक्रमण होने पर क्रमशः मेतासिस्टाफोस एवम मोनोक्रोटोफोस का 1.5 से 2.0 मि. ली. प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़कावकरना चाहिये। स्पोडोप्टेरा सुंडी को चुन- चुन कर एकत्र करके 2 फीट गहरे गड्ढे में दबा दें। कभी-कभी अधिकाधिक नमी होने के कारण क्राउन विगलन, पाउडरी मिल्ड्यू तथा फ्युजेरियम की बीमारी आती है और इसके बचाव के लिए क्रमशः कार्बेन्डाजिम, कॉपर आक्सीक्लोराइड एवम केप्टान तथा बाविस्टिन 1.5 - 2.0% मात्रा के रासायनिक घोल का 15 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करते रहना चाहिये।